अधिहरि: - 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धि ...' सूत्रानुसार अधि अव्यय का हरि: पद के साथ अव्ययीभाव समास हुआ।
'कृत्तद्धित समासाश्च' से इसकी प्रातिपदिक संज्ञा हुई।
'सुपो धातु-प्रातिपदिकयो:' से विभक्ति का लोप होकर
हरि + अधि, 'प्रथमा निर्दिष्टं उपसर्जनं' समास में प्रथमा से निर्दिष्ट 'अधि' अव्यय की उपसर्जन संज्ञा हुई और 'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसका पूर्वनिपात हुआ + अधिहरि,
'एकदेश विकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुन: 'कृत्तद्धित समासाश्च' से उसकी प्रातिपादिक संज्ञा हुई, 'स्वौजसमौट ..' से 'सु' विभक्ति होकर, 'अव्ययीभावश्च' से उसकी अव्यय संज्ञा हुई 'अव्ययादाप्सुप:' से 'सु' का लोप होने पर अधिहरि रूप सिद्ध हुआ।

911. अव्ययीभावश्च - 2/4/18
यह विधिसूत्र है। 943 - 'स नपुंसकम्' - नपुंसक लिंग को बतलाने वाला यह सूत्र है और 'च' के द्वारा इसी की अनुवृत्ति होती है कि अव्ययीभाव समास नपुंसक लिंग में होता है। यथा - अधिगोपम्, लौ० वि० - गो: पाति इति गोपा:, तस्मिन् अर्थात् गोपि। अ० वि० - गोपा + ङि+ अधि।

912. नाव्ययीभावादतो ऽम्त्वपञ्चम्या: - 2/4/83
यह विधिसूत्र है। अकारान्त अव्ययीभाव समास के बाद आनेवाले 'सुप्' का लोप नहीं होता है। किन्तु पंचमी विभक्ति को छोड़कर अन्य सुप् के स्थान पर 'अम्' आदेश होता है।
यथा - अधिगोपम् - 'अव्ययं..' से समास, 'कृत्त..' से प्राति० संज्ञा, 'सुपो धातु..' से विभक्ति का लोप - 'प्रथमा..' से उपसर्जन संज्ञा, 'उपसर्जनं..' से पूर्वनिपात, - अधिगोपा, 'एकदेश..' से पुन: प्राति० संज्ञा, 'अव्ययीभावश्च' से नपुंसक लिंग में, 'अव्ययादाप्सुप:' से 'सुप्' का लोप प्राप्त होने पर, 'नाव्ययी...' से 'सु' का 'अम्' आदेश हुआ और 'अमि पूर्व:' से पूर्व रूप होकर अधिगोपम् सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner